रविवारीय

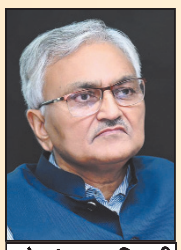

प्रो.चंद्र चारु त्रिपाठी

एक चौंकाने वाली सच्चाई यह की भारत में केवल 100 में से सिर्फ 5 युवाओं को ही औपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण मिलता है. बाकी 95 छात्र अन्य डिग्री जैसे आर्ट्स, कॉमर्स, कृषि, विज्ञान आदि डिग्री के पीछे अपना अमूल्य समय व्यतीत करते हैं. वे किताबी ज्ञान लेकर 8 से 10% सरकारी नौकरी की दौड़ में पिछड़ जाते हैं और अंत में हार मान कर बेरोजगार के श्रेणी में आ जाते हैं. बहुत सारे सर्वे के अनुसार आधे से ज्यादा युवा रोजगार योग्य ही नहीं माने जाते! यह कैसा विरोधाभास है कि देश में 69% नौकरियां संगठित क्षेत्र में हैं, पर हमारे पढ़े-लिखे युवा तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल नहीं प्राप्त करने के कारण उन्हें नहीं पा सकते!

जब डिग्री मिले और नौकरी भी

मेरे पास बीए है, पर नौकरी नहीं - यह कहानी अब बदलने वाली है!

राजकुमार ने जब इतिहास में बीए किया, तो सोचा था शिक्षक बनेंगे. लेकिन डिग्री के बाद मिली बेरोजगारी. ऐसे ही लाखों राजकुमार हर साल कॉलेज से निकलते हैं - डिग्री हाथ में, पर जेब खाली. लेकिन अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक नया रास्ता दिखाया है, जिसमें पॉलीटेक्निक एवं तकनीकी शिक्षण संस्थान बन रहे हैं गेम चेंजर.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पॉलीटेक्निक एवं तकनीकी शिक्षा के माध्यम से विभिन्न व्यावसायिक कोर्सों के माध्यम से वह जादुई चाबी युवाओं को दे सकती है जो खोल देगी रोजगार के दरवाजे.

पॉलीटेक्निक संस्थान सिर्फ डिप्लोमा देने वाले संस्थान नहीं, बल्कि कौशल की खदान हैं. देश भर के 3,500 से ज्यादा पॉलीटेक्निक में 15 लाख युवा पढ़ रहे हैं. दिलचस्प बात यह है कि इन डिप्लोमा धारकों में 95त्न को नौकरी मिल जाती है! अब कल्पना कीजिए, अगर यही कौशल प्रशिक्षण बीए, बीकॉम, बीएससी एग्री.और बीएससी करने वाले छात्रों को भी मिले तो क्या होगा? यही है एनईपी 2020 का सपना!

शिक्षा नीति ने तीन स्मार्ट रास्ते सुझाए हैं

पहला रास्ता: जब आप बीए कर रहे हों, साथ-साथ टूर गाइड, डिजिटल मार्केटिंग या म्यूजियम प्रबंधन से संबंधित वोकेशनल कोर्स भी सीख सकते हैं.

दूसरा रास्ता: अपनी डिग्री पूरी करके अतिरिक्त कौशल डिप्लोमा सर्टिफिकेट क्रेडिट कोर्स हासिल कर सकते हैं.

तीसरा रास्ता: अगर कॉलेज में दाखिला नहीं मिला, तो पॉलीटेक्निक से सीधे कौशल कोर्स करके नौकरी पाएं.

देखिए कैसे बदलेगी आपके बच्चे की किस्मत!

इतिहास पढ़ें, टूर गाइड बनें!

आपका बेटा या बेटी अगर इतिहास और पर्यटन में रुचि रखते हैं, तो सिर्फ किताबें रटने के बजाय अब वे सीख सकते हैं और हासिल कर सकते हैं व्यावसायिक कौशल. जिनके माध्यम से कुशल टूर गाइड बन सकते हैं, म्यूजियम को कैसे संभालें, विरासत स्थलों का प्रबंधन कैसे करें, ट्रैवल ब्लॉगिंग और डिजिटल मीडिया आदि से संबंधी कौशल आधारित दो से तीन क्रेडिट के सर्टिफिकेट कोर्स एनएसडीसी, सेक्टर स्किल काउंसिल से प्रमाणित स्किल ट्रेनिंग सेंटर्स से कर सकते हैं.

कल्पना कीजिए - आपका बच्चा बीए करते-करते प्रोफेशनल टूर गाइड का सर्टिफिकेट भी हासिल कर ले! डिग्री भी, नौकरी की गारंटी भी!

बीकॉम के साथ बनें डिजिटल मार्केटिंग एक्सपर्ट!

वाणिज्य के छात्रों के लिए अब सिर्फ अकाउंट्स की बोरियत नहीं, बल्कि: सोशल मीडिया मार्केटिंग, ई-कॉमर्स बिजनेस,डिजिटल पेमेंट सिस्टम,अपना स्टार्टअप शुरू करने की ट्रेनिंग, भौतिकी के साथ मिले सोलर एनर्जी का ज्ञान!

विज्ञान के छात्रों को अब मिलेगी,सौर ऊर्जा सिस्टम की ट्रेनिंग,डेटा साइंस और एआई की बेसिक्स, इलेक्ट्रिक वाहन टेक्नोलॉजी, लैब तकनीक और रिसर्च स्किल्स.

इस तरह के प्रयास से असली बदलाव की बहुत सारी प्रेरणाप्रद सफल कहानियों में से एक है.जयपुर की सफलता जहां 90% नौकरी की गारंटी!

जयपुर के पॉलीटेक्निक में एक प्रयोग हुआ. कला और वाणिज्य के छात्रों को शिल्प डिजाइन और ई-कॉमर्स की ट्रेनिंग दी गई. इसका नतीजा यह रहा कि दाखिले में 40% की बढ़ोत्तरी और 90% छात्रों को नौकरी मिली. अब वहां के छात्र सिर्फ डिग्री नहीं, बल्कि अपना भविष्य पा रहे हैं. केरल मे पर्यावरण पर्यटन से 92% प्लेसमेंट संभव हो सका है- केरल में एक छोटे से पॉलीटेक्निक ने इको-टूरिज्म मॉड्यूल शुरू किया. मानविकी के छात्रों को सिखाया कि कैसे प्रकृति को बचाते हुए पर्यटन चलाएं. आज 92% छात्रों के पास नौकरी है - वह भी अच्छी सैलरी पर!

तमिलनाडु का तगड़ा कदम- 25,000 युवाओं को ईवी की ट्रेनिंग! इलेक्ट्रिक वाहन भविष्य हैं. तमिलनाडु ने यह समझा और 25,000 विज्ञान के छात्रों को ईवी तकनीक सिखाई. आज ये युवा टेस्ला और ओला इलेक्ट्रिक जैसी कंपनियों में काम कर रहे हैं!

गुजरात का जुगाड़: 45% लड़कियां भी आगे!- गुजरात के स्मार्ट पॉली मॉडल ने कमाल कर दिया. माइक्रो-क्रेडेंशियल्स के जरिए छोटे-छोटे सर्टिफिकेट देकर 45% महिला भागीदारी हासिल की. अब लड़कियां भी बिना झिझक तकनीकी कोर्स कर रही हैं!

भोपाल का एनआईटीटीटीआर बना है मार्गदर्शक- NITTTR भोपाल इस क्रांति का कमांडर बना हुआ है. यहां से 3 लाख शिक्षकों को नई तकनीक की ट्रेनिंग AI, IoT, AR/VR, मैकेट्रॉनिक्स , आटोमेशन, रोबोटिक्स , सेमीकंडक्टर पैकेजिंग , यंत्र निर्माण आदि जैसी आधुनिक तकनीक में कोर्स ऑफर कर रहा है. हर साल पाठ्यक्रम अपडेट करने की व्यवस्था

कस्टमाइज्ड MOOC कोर्स - गांव-गांव तक शिक्षा पहुंचने का प्रयास अपने ई प्रशिक्षण पोर्टल के माध्यम से कर रहा है. एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी कहते हैं, हम सिर्फ पढ़ाना नहीं सिखा रहे, बल्कि रोजगार देना सिखा रहे हैं. उनका कहना है कि 2035 तक भारत सरकार का सपना है और विश्वास है कि 60% कॉलेजों में पॉलीटेक्निक एवं तकनीकी संस्थाओं की मदद से व्यावसायिक कोर्स का निर्माण कर आधे छात्रों को कौशल प्रशिक्षण की गारंटी. 10000 माइक्रो-क्रेडेंशियल्स - यानी छोटे-छोटे सर्टिफिकेट जो नौकरी दिलाएं के माध्यम से भारत को कौशल कैपिटल देश बना सकते हैं.

(लेखक राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल के निदेशक हैं)

पॉलीटेक्निक एवं उच्च शिक्षा के तकनीकी शिक्षण संस्थान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बदल रहे हैं भारतीय शिक्षा का नक्शा

यह सिर्फ सपना नहीं, हकीकत बनने वाला है!

आज का दौर एआई और डिजिटल फाइनेंस का है. अब वही युवा आगे बढ़ेगा जो सिर्फ डिग्री नहीं, बल्कि स्किल्स लेकर निकले. कौशल एवं व्यावसायिक कोर्स वह सीढ़ी है जो आपके बच्चे को किताबों की दुनिया से नौकरी की दुनिया तक ले जाएगी.याद रखिए - अब डिग्री तो सबके पास है, पर स्किल किसी-किसी के पास! और स्किल ही असली संपत्ति है. तो अगली बार जब आपका बच्चा कॉलेज जाए, तो पूछिए - क्या तुम्हारे कॉलेज में पॉलीटेक्निक के साथ कोई कोर्स है? क्योंकि वही कोर्स बदल सकता है उसकी किस्मत!

कविता

काल भी हार गया जिस प्रण से हुए स्वतन्त्र तभी उस क्षण से

अजय मिश्रा

आज अगर हम हैं स्वतन्त्र तो ,
सुन लो इसका सब इतिहास ,

एक दूसरे से उलझे हम पाने ,
मान प्रतिष्ठा , हास-परिहास ,

कारण बनी रही बिडम्वना ,
हुए सभी हम उनके दास ,

दोहन ही स्वभाव थे जिनके ,
लुटे पिटे सदियों तक जिनसे ,

हुई ग्लानि जब निज कर्मों से ,
जागा स्वाभिमान चेतन से ,

त्यागी-तपस्वी वीर-व्रती थे ,
देख-देख भारत जन पीड़ा ,
सभी मनस्वी बहुत दुखी थे ,

मातृ भूमि पर बंधन कैसा ,
सब सनातनी तब झगड़ा कैसा ,
दिया मंत्र जब उनने ऐसा ,

उठती टीस वेदनाओं की ,
तब कंटक सम हैं हीरक हार ,

चिंगारी भड़की बन शोला ,
भार सभी हम आज रहेंगे ,
मातृभूमि आजाद करेंगे ,
लाख कंठ स्वर यही पुकार ,

दमन चक्र ऐसे चलते थे ,
सौ-सौ खूनी सोते फूटे थे ,

हरी-हरी भारत भूमि पर ,
लाखों सर-धड कटे पड़े थे ,

काल भी हर गया जिस प्रण से ,
हुए स्वतन्त्र तभी उस क्षण से

सत्ता पर ''आरूढ़'' होकर भी

होटल संस्कृति की शरण क्यों लेनी पड़ रही है?

राजीव खंडेलवाल

भारतीय राजनीति में दल-बदल की परंपरा पुरानी है. वर्ष 1967 में आया राम-गया राम का दल-बदल का जो क्रम चालू हुआ, परिणाम स्वरूप संविद (संयुक्त विधायक दल) की सरकारें बनी, टूटी. लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह एक नई और चिंताजनक रूप धारण कर चुकी है.

आया-राम गया राम- वर्ष 1967 में हरियाणा के पलवल से ''निर्दलीय'' विधायक ''गया लाल'' ने मात्र 15 दिनों के भीतर कई बार अपनी निष्ठा बदली. पहले ''कांग्रेस'' को समर्थन दिया, फिर ''संयुक्त विधायक दल'' में शामिल हुए, वापस ''कांग्रेस'' लौटे और फिर ''उसी दल'' में चले गए. संयुक्त विधायक दल के नेता राव बीरेंद्र सिंह ने मीडिया के सामने व्यंग्यपूर्ण ढंग से कहा, ''जो ''गया राम'' थे, वो ''आया राम'' हो गए''. इसी से प्रसिद्ध मुहावरा ''आया राम-गया राम'' जन्मा, जो आज भी भारतीय राजनीति की अस्थिरता का प्रतीक बावजूद दल-बदल विरोधी कानून के बना हुआ है.

इस ''आया राम, गया राम'' की ''चरम'' स्थिति तब पहुंची, जब वर्ष 1979 में हरियाणा की भजन लाल की पूरी की पूरी जनता पार्टी सरकार ही एक झटके में ''कांग्रेसी'' हो गई, पर तब ''होटल संस्कृति'' जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी. आज पिछले 15-20 वर्षों से ''तथाकथित स्वच्छ राजनीति'' के दौर में यह ''होटल संस्कृति'' एक ''स्थापित चलन'' बन चुकी है, जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ही शामिल हैं. दुर्भाग्यवश कोई भी पार्टी इस दोष से अछूती नहीं रही है.

सत्ता को बनाये रखने के लिए स्थापित होती होटल संस्कृति- आज की राजनीति में ''अविश्वास'' की खाई इतनी गहरी हो गई है कि जनता का विश्वास (जनादेश) प्राप्त कर चुनाव जीतने के बाद भी विधायक या पार्षदों पर ''नेतृत्व'' का भरोसा नहीं रहता है. खासकर जब जीत (बहुमत) की संख्या का अंतर ''बहुत कम'' होता है अथवा एक पक्ष को ''स्पष्ट बहुमत न मिलना'' हो. नतीजा दल-बदल का ''खेल'' चालू हो जाता है और सत्ता पर आरूढ़ होकर ''मजबूत'' होने के बावजूद विधायकों को पांच सितारा होटलों में शिफ्ट करने के लिए ''मजबूर'' कर दिया जाता है. ताकि वे ''बैरेकेडिंग'' में रहें, बाहर की दुनिया से कटे रहें और कोई ''चालबाजी'' न कर सके. यह ''संस्कृति'' दल-बदल विरोधी कानून की ''काट'' बन चुकी है, जहां कानून के प्रावधानों को ''चकमा'' देकर ''सत्ता बचाई'' जाती है.

एक ताजा और स्पष्ट उदाहरण मुंबई महानगरपालिका चुनाव का है. ''शिवसेना'' के 29 पार्षद चुनाव जीते. इनके नेता, पार्टी के अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र सरकार में उपमुख्यमंत्री पद पर आसीन हैं और ''सत्ता के डंडे का पूरा सुरक्षा कवच'' लिए हुए हैं. बावजूद इसके, विपक्ष से डरने की बजाय अपने ही गठबंधन के सहयोगी (या आंतरिक दबाव) से डरकर इन पार्षदों को मुंबई के बांद्रा स्थित पांच सितारा होटल (ताज लैंड्स एंड) में शिफ्ट कर दिया गया. यहां वे ''रिफ्रेश'' होने के नाम पर, वास्तव में निगरानी और सुरक्षा के घेरे में रखे गए. वर्तमान में सत्ता तो समस्त कार्यो पर आंच न आने देने वाली 'ढ़ाल' बन चुकी है. बावजूद इसके सत्ता पर बैठे नेता को होटल संस्कृति अपनाना पड़े? यह कैसा लोकतंत्र है, जहां ''लोक'' (जनता) की जगह ''तंत्र'' (सत्ता का खेल) हावी हो जाता है? जन प्रतिनिधि जनता के विश्वास पर चुने जाते हैं, लेकिन ''अपने नेता के विश्वास'' को जीतने के लिए होटल की चारदीवारी में कैद होना पड़ जाता हैं.

''दल-बदल कानून की विफलता और नए हथकंडे''- दल-बदल विरोधी कानून को विफल करने के प्रयास के चलते, समय-समय पर संशोधन कर कड़े प्रावधान किए गए हैं. दो-तिहाई से कम विधायकों के टूटने पर सदस्यता समाप्त हो सकती है. लेकिन सत्ता के लालच में नेताओं ने ''तू डाल-डाल में पात-पात'' वाली तर्ज पर नए-नए तरीके ''ईजाद'' कर लिए हैं. इसका सबसे बड़ा उदाहरण 2018-19 का मध्य प्रदेश है, जहां कमलनाथ सरकार को गिराने के लिए विधायकों ने विधानसभा की सदस्यता से सामूहिक इस्तीफा (लगभग 22 ने) दे दिया, था परिणाम फलस्वरुप ''बहुमत खत्म'' होकर ''निर्वाचित सरकार गिर गई''. इस्तीफा देने वाले विधायकगण विपरीत ''विचारधारा वाले चुनाव चिन्ह'' पर चुनाव लड़कर जीत गए. यह स्थिति यह दर्शाती है कि भारतीय मतदाता आज पार्टी की नीति-रीति या विचारधारा पर कम, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व, स्थानीय संबंधों और परस्पर लाभ पर ज्यादा वोट देता है. इसलिए वोट पार्टी के नहीं, व्यक्ति के माने जाते हैं. जब जन-प्रतिनिधि ''इधर से उधर'' होने लगते हैं, तो वोट भी इधर से उधर ''खिसक'' जाते हैं. ''जैसी करनी, वैसी भरनी''?

''समाधान की दिशा''. ''जर्मनी द्वितीय मतदान पद्धति'' को अपनाने की जरूरत- वर्तमान सत्ता के दुरूपयोग व पैसे के प्रभाव की स्थिति भारतीय लोकतंत्र के लिए खतरनाक है. ''आया राम-गया राम'' की प्रवृत्ति को जड़ से खत्म करने का एकमात्र कारगर उपाय जर्मनी जैसी प्रणाली अपनाना है, जहां मतदाता पार्टी को वोट देता है, पार्टी को मिले वोट प्रतिशत के आधार पर ही सीटें आवंटित होती हैं, जिससे दल-बदल की गुंजाइश लगभग समाप्त हो जाती है. व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा पर पार्टी की

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल नगर सुधार न्यास)

ऊपर उठना होगा

संदीप खमेसरा

केरल लिटरेचर फेस्ट में आईं भारतीय मूल की अमेरिकी एस्ट्रोनॉट- सुनीता विलियम्स ने कहा सबसे बड़ा सबक किताबों से नहीं, अंतरिक्ष (स्पेस) से मिला. ऊंचाई से धरती को जब देखा, तो इंसानी झगड़े, सीमाओं की लड़ाई, विचारधाराओं की टकराहट बहुत छोटी प्रतीत होती है. उन्होंने कहा, विज्ञान व खोज सिर्फ तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक अभ्यास भी है, जो यह सोचने की क्षमता देता है कि हम सीमाओं से परे जाकर कैसे एक साथ रह सकते हैं.

निश्चित ही, जब तक मानव लिप्त रहेगा और विषयों से दूरी नहीं बनाएगा, तब तक दृष्टि का विस्तार उपस्थित नहीं होगा. अपने क्षुद्र स्वार्थों को छोड़े बिना, बड़े और ऊंचे स्तर से सोचना प्रारंभ नहीं हो सकता. पूरे विश्व में त्राहिमाम है. कुछ युद्ध उकसा रहे हैं, कई सारे, लड़ाइयों में उलझे पड़े हैं. बड़े देश अपने स्वार्थों के लिए, सामरिक कारणों से या प्राकृतिक भरपूरता के लिए छोटे देशों पर कब्जे की बदनियत रखने लगे हैं. देशों के भीतर, सांप्रदायिक विद्वेष से घोर अशांति का साम्राज्य है. दंगे फसाद, असौहार्द और नफरत से पूरा संसार अनिश्चिताओं के कालखंड में प्रवेश कर चुका है.

इन सबके बीच, वैयक्तिक शांति और आनंद के भाव को बचाए रख पाना, सबसे बड़ी चुनौती है. भारतीय दर्शन ने आध्यात्म का मार्ग दिया. यह, संसार को एक दूरी और एक ऊंचाई से देखने का ही प्रशस्तिकरण है. इसमें व्यक्ति, चेतना की उस सर्वोच्च अवस्था को उपलब्ध होता है, जहाँ सुख-दु:ख, लाभ-हानि और जय-पराजय कोई विशेष मायेन नहीं रखते. यह आत्मा को पहचाने, अहंकार को त्यागे और परमात्मा (उच्च शक्ति) के प्रति पूर्ण एकात्म की स्थापना की स्थिति है. इस अवस्था में शांति, आनंद, निस्वार्थ प्रेम, करुणा और आत्मानुभूति मुख्य होती है. आध्यात्म, मैं और मेरा की भावना से मुक्त होकर परम शक्ति से साक्षात्कार करने की यात्रा है. यह यात्रा भी वही है, जिसमें व्यक्ति सांसारिक और भौतिक स्तरों से ऊपर उठ जाता है. और जैसे जैसे व्यक्ति उर्ध्वगामी यात्रा में प्रविष्ट होता है, संसार की यह द्वेषपूर्ण लड़ाइयां और वैचारिक मतभेद तुच्छ मालूम पड़ते हैं.

संसार को एक साथ बदलना संभव नहीं है. व्यक्तिगत रूप से ऊपर उठने के ही प्रयास जारी रखने होंगे. वैयक्तिक सुख और शांति को प्राथमिकता बनाना होगा. ऊंचाई का जो स्तर इससे हासिल होगा, उससे प्रेरित होकर एक बड़े जनमानस में भी इस उपलब्धि की ललक पैदा हो जाए तो संभवतया विश्व का कल्याण संभव होगा.

नर्मदा जयंती पर विशेष

माँ नर्मदा-जिनके दर्शन मात्र से व्यक्ति का कल्याण होता है

डॉ. विनोद मिश्रा
कुलगुरु
लोधी विश्वविद्यालय

माँ नर्मदा के महत्व को प्रतिपादित करते हुये ऋषि मार्कण्डेय ने कहा कि देवि समस्त ऋषि, देवताओं एवं महर्षियों की ओर से आपको नमस्कार. आपने समस्त परस्पर जगत समेत मृत्युलोक को पवित्र एवं पुष्पमय कर दिया है. जल के रूप में प्राप्त हुई नर्मदा जी, भगवान महादेव की सर्वोत्तम चामुण्डा है. मेकल पर्वत से प्रगट होने के कारण आप मेकलसुता (कन्या) कहलाई. माँ आपको बारम्बार नमस्कार है.

ऋषि अगस्त्य ने माँ की महिमा को प्रतिपादित करते हुये कहा कि एकमात्र माँ नर्मदा देवी पुण्यमयी एवं शुभ है. जम्बूदीप एक लाख योजन बतलाया गया है. इसमें जितने भी चराचर प्राणी हैं. वे नर्मदा का जल पीकर शिवलोक की जाते है.

माँ नर्मदा के मूल्य को प्रतिपादित करते हुये कहा गया है कि इस युग में सभी समुद्र और नदियाँ सूख चुकी हैं.

सात कल्पों के अंत में नर्मदा का विनाश नहीं हुआ.

अर्थात- जब प्रलयकाल को समस्त सागर एवं सरितार्य क्षीण होकर नष्ट हो गई. तब साल कल्पतम माँ रेवा आप शास्वत बनी हैं. इसलिये आपका नाम नर्मदा पड़ा है. माँ नर्मदा का प्रागट्य माघ शुक्ल सप्तमी, अश्विन नक्षत्र, दिन रविवार को मकर राशिगत सूर्य रहते हुये मध्यान्ह काल में इस पृथ्वी पर हुआ.

माँ नर्मदा के संबंध में कहा गया है कि सरस्वती में 3 दिन तक, यमुना में 7 दिन तक गंगा में एक दिन स्नान करने से जो पुण्य लाभ मिलता है. वह पुण्य लाभ माँ नर्मदा के मात्र दर्शन मात्र से हो जाता है.

एक अन्य श्लोक में माँ नर्मदा के महत्व को विशिष्ट रूप से परिभाषित किया गया है कि गंगा कनखले पुण्य प्राच्या पुण्य सरस्वती.

यहां गोदावरी है, पुण्य है, और हर जगह नर्मदा है.

अर्थात- गंगा हरिद्वार में पुण्य देने वाली, परिचय में माँ सरस्वती जी. दक्षिण में गोदावरी पुण्यमयी हैं तो माँ नर्मदा समस्त स्थानों में पुण्यमयी एवं पूजनीय है.

माँ नर्मदा व्यक्ति को आनंद भी देती है तथा व्यक्ति के मद का (अहंकार) का शमन भी करती है. इसलिये इन्हें रेवा (नर्मदा) कहा जाता है.

एक बार महाराजा युधिष्ठिर ने मार्कण्डेय ऋषि से पूछा कि भगवन् . राजा पुरुवा से पहले महाराज हिरण्यतेजा ने कैसे माँ नर्मदा को पृथ्वी पर उतारा. तब मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि राजन चन्द्रवंश में एक अत्यन्त प्रतापी एवं तेजस्वी राजा हिरण्यतेजा थे. उनके राजय में सभी प्रसन्न एवं सुखी थे. एक बार उनके राज्य में सूर्यग्रहण पड़ा. उन्होंने उस समय हजारों लाखों व्यक्तियों गाय, सुवर्ण, मणि समेत अन्न इत्यादि दान किया. लेकिन पितर इससे संतुष्ट नहीं हुये तो राजा ने पितरों से उनकी अप्रसन्नता पर प्रश्न किया तो पितरों ने कहा कि राजन आपके राज्य में बावी, कुर्य, सरोवर तो है लेकिन कोई नदी नहीं है. अत: हम संतुष्ट नहीं है तब राजा ने भगवान शिव की तपस्या की तथा उनसे माँ नर्मदा को जम्बूद्वीप में लाने का वर मांगा. तब माँ नर्मदा को प्रादुर्भाव हुआ तथा पितर संतुष्ट हो स्वर्ग में गये.

मेरी पत्नी ने सन्यासी की तरह विदाई दी जब माँ नर्मदा परकम्माका विचार आया तो मुझे ऐसा लगा कि सबसे बड़ी समस्या पत्नी से पूछने पर होगी तथा वे अवश्य मना कर देगी. अत: विचार किया कि परकम्मा में चलने के एक या दो दिन पूर्व पूछूँगा. हमारा कार्यक्रम लगभग बन गया तथा तिथि 24 मई 2004 तय. मैं, आई गंगा शर्मा, भाई रमेश शर्मा चलने को तैयार. यह भी तय हुआ कि परकम्मा को पूर्णत: विधिविधान एवं परकम्मावासियों के परिधान से प्रारंभ किया जाये. मुझे हमेशा परकम्मावासियों का परिधान सफेद बड़ी एवं सफेद धोती आकृष्ट करती रही है. जब मैने पत्नी से कहा कि मैं 2 दिन बाद परकम्मा प्रारंभ करूँगा तो उन्होंने बिना किसी प्रश्न-उत्तर के स्वीकृत दे दी. मैं माँ नर्मदा की इसे अद्?भुद कृपा मानता हूँ.

शनै :शनै : प्रदूषित हो रही है माँ नर्मदा मैंने 2004 में नर्मदा परिक्रमा प्रारंभ की थी तथा इसपर अपने अनुभवों (परिक्रमा के) को प्रथम पुस्तक %नर्मदा तीरे धीरे-धीरे में उल्लेखित किया था तथा कहा था कि शनै : शनै : नर्मदा में निरंतर प्रदूषण बढ़ रहा है. जो भविष्य के लिये घातक है. प्रदूषण बढ़ने के अनेकानेक कारण है तथा इसके लिये हम स्वयं जिम्मेवार है. जैसे-बढ़ते हुये कटाव, समाप्त होते जंगल, व्यापक रूप से रेत का उत्खनन (अब तो नर्मदा से अवैध उत्खनन उद्?द्योग बन गया है), गंदा पानी, इसमें मलमूत्र तथा अपशिष्ट का विसर्जन, पूजन सामग्री का विसर्जन, रासायनिक उर्वरकों का मिलना, वाहन, गाय-भैंस को स्नान इत्यादि से जीव जंतुओं (मछलियाँ / जलचरों) के अस्तित्व अर्थात जैव विविधता पर खतरा उत्पन्न हो गया है. इसके अलावा नर्मदा के तटों के आसपास अवैध अनियोजित विकास पमुख कारण हैं..

अत: आवश्यक है कि इन प्रवृत्तियों को रोका जाये तथा नर्मदा के तटों के आसपास व्यापक वृक्षारोपण किया जाये. अन्यथा ऐसा न हो कि जिस तरह सरस्वती नदी का लोप हो गया है? मॉ नर्मदा के साथ भी ऐसा न हो जाये. फिर हम आगे वाली पीढ़ियों को बतलायेंगे कि एक नर्मदा जी हुआ करती थी? माँ नर्मदा पर प्रदूषण पर लिखित कुछ पंक्तियों (नर्मदा तीरे धीरे धीरे) पुस्तक से ली गई-

सबको तारने वाली माता. क्यों उसको मार रहे हैं.
घर का कूड़ा कचरा क्यों उसमें डाल रहे हैं ..
नहीं डालना है जो चीजें, क्यों उसमें डाल रहे हैं.
क्यों उसको मार रहे हैं, क्यों उसको मार रहे हैं..

आज माँ नर्मदा की जयंती पर हम सभी शपथ लेते हैं कि हम अपने दायित्व का गंभीरता से निर्वहन करें ? न केवल माँ नर्मदा अपितु सभी जल स्त्रोतों कुओं, बावलियों, तालाबों को भी साफ एवं सुरक्षित रखेंगे. यह हमारी अगली पीढ़ी के लिये दिया गया आशीर्वाद होगा .